श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २१३ ● अप्रैल-२०२५

Volume no. 18, Issue No. 213 April 2025

फूलदोलोत्सव
२०२५

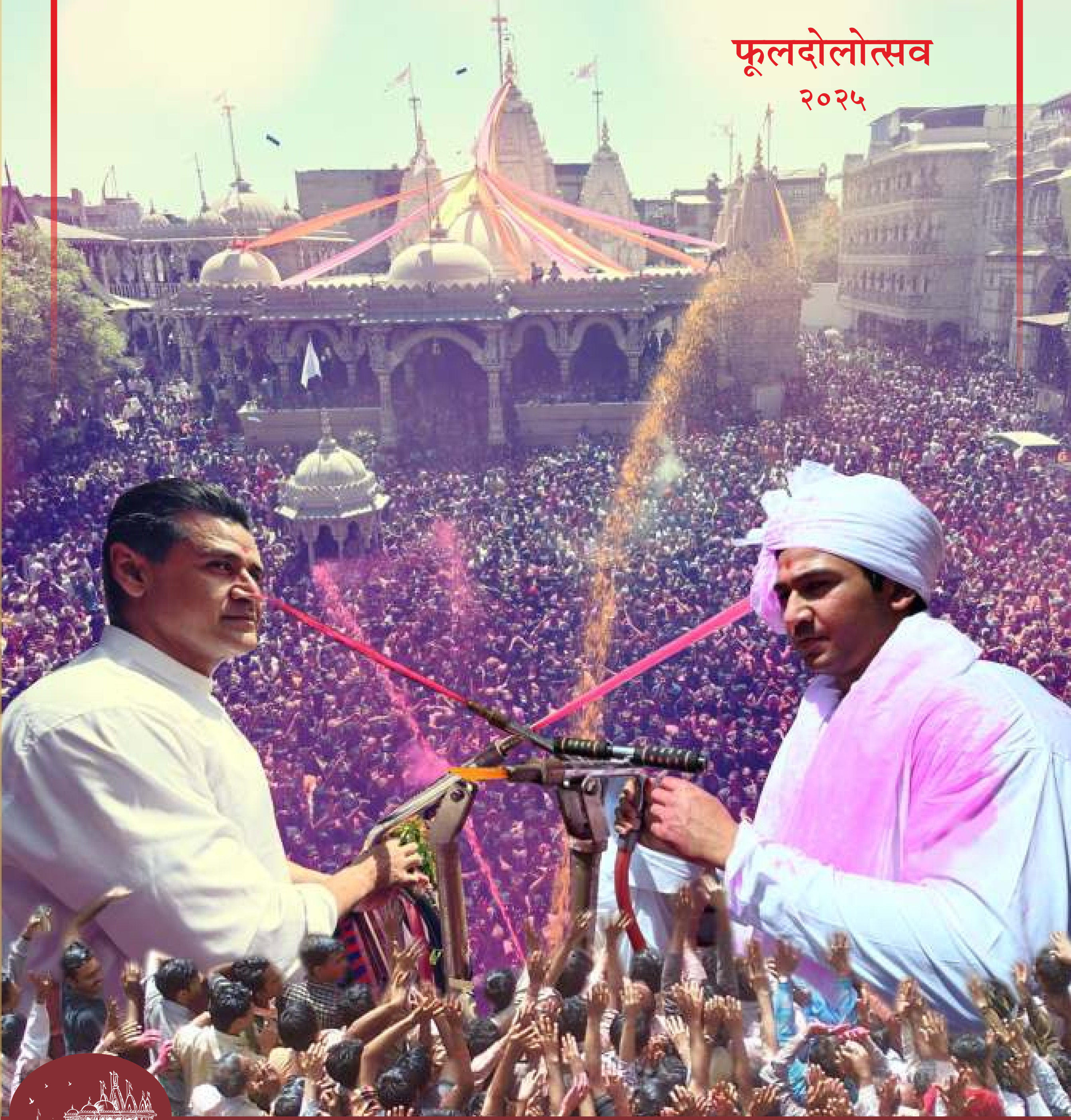

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

जयपुर (बगरु) नूतन मंदिर तथा विश्रांति भवन में मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

रतनपर (सुरेन्द्रनगर) नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

चोबारी (कच्छ) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में अहमदाबाद तथा भुज मंदिर के महंत स्वामी ।

राणिप मंदिर द्वारा आयोजित सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

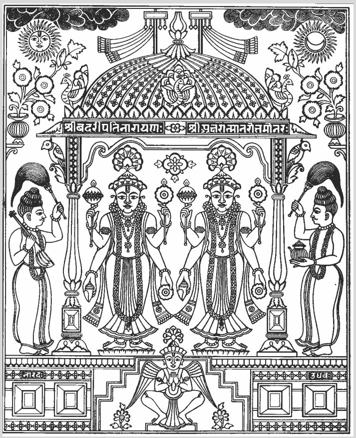

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ • अंक : २१३ • अप्रैल-२०२५

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० • प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. जवारा (जौ - जव) ०६

०४. श्रीहरि के ६वे, ७वे और ८वे वंशज के मुख से आर्शीवचन ०८

०५. अपने हरि मंदिरो तथा प्रसादी के स्थल सादरा-वासणा देश, श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर १४

०६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १५

०७. भक्ति सुधा १६

०८. सत्संग समाचार १९

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

जीव मात्र का जन्म मानव योनि में केवल स्वयं के कल्याण के लिये हुआ है।

मनुष्य की शरीर प्राप्त करके कैसे जिये। प्रात: काल कब से उठकर अपने जीवन व्यवहार को कैसे व्यतीत करे। वह भी त्यागी, गृहस्थ से राजा तक के धर्म कैसा हो यह लिखकर मिला है। शिक्षापत्री में।

महाराज अपनी उपस्थिति में अलग-अलग समय पर अलग-अलग जगह पर ''समैया'' करते थे। इस समैया का उद्देश्य कई जीव को समास होता है। जीव के कल्याण की बात समझाया जा सके इस उद्देश्य से था। समैया के द्वारा कई व्यक्तियो का योग हुआ है। आज का सत्संग इसका ही परिणाम है।

शिक्षापत्री में मानव जीवन जीने के लिये आचार, व्यवहार और प्रायश्चित की बात की गयी है। जीवन का लक्ष्य भी बताया गया है।

निजात्मने ...... भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥११६॥

भगवान की भक्ति करना सभी साधनो में श्रेष्ठ साधन है। यह जीवन का परम साध्य है। भक्ति किसी का बनाया द्रव्य, मान, रसास्वाद आदि के लोभ से दंभ से नही करना चाहिए। ब्रह्मरुप होकर नित्य भगवान की भक्ति करने की आज्ञा है। यही अन्तिम ध्येय होता है। गागर में सागर के समान श्रीजी स्वरुप यह शिक्षापत्री सामान्य मानव, विद्वानो और युग प्रवर्तको ने हमेशा प्रेरणापान कराया है।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के ग्रंथमणी में लिखे है। यह आगामी वर्ष में २०० वर्ष पूरा करने वाला है।

श्री नरनारायणदेव देश पीठ के तरफ से इस महान ग्रंथ का द्विशताब्दी वर्ष को प.पू. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से शिक्षापत्री लेखन का २०० वर्ष का ''समैया'' ता. २३-१-२०२६ से २७-१-२०२६ तक दिव्य रुप से मनाने का निश्चय किया गया है।

इस लिये मेरा मानव मात्र को हार्दिक आमंत्रण है। आइये शिक्षापत्री का अनुसरण करे। सुखी बने और जीवन के अन्तिम ध्येय मोक्ष की प्राप्ति करे। यही नरनारायणदेव के चरणो में वंदना है।

मेरे हेतपूर्वक द्वारा सभी को जयश्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०२५)

२ विश्व का सर्वप्रथम मंदिर अहमदाबाद में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का २०३ वाँ पाटोत्सव महामहोत्सव षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किये ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप और घाटलोडिया पर पधारना ।

१४ पूनम की सत्संग सभा के अवसर पर पधारना । श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव को अपने उपस्थित में मनाना ।

१५-१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर (बगरु) नूतन मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१८-१९ चोबारी (भचाउ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

२२ जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के १९९ वे पाटोत्सव महामहोत्सव को अपने उपस्थिति में मनाना ।

२९ श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के १४ वें स्थापना दिन को अपने उपस्थिति में मनाना ।

३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर (मूली प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०२५)

२ परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०३ वे पाटोत्सव महामहोत्सव षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किये ।

५ मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पधारना ।

१४ श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव मंदिर के प्रसादी चौक में भव्य रुप से सजाये जाये पंडाल में हजारो संत हरिभक्तो की उपस्थिति में मनाये ।

२२ जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १९९ वाँ पाटोत्सव षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो से पूर्ण किये ।

२९ श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के १४ वाँ स्थापना दिवस पर अपनी उपस्थिति में भव्य रुप से मनाये ।

जवारा

(जौ - जव)

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने सनातन धर्म की परम्परा में जब भी कोई शुभ मंगल त्यौहार होता है। तो उसके पहले एक मिट्टी के पात्र में मिट्टी भरकर जौ बोया जाता है। यह हम लोग स्थायी तौर पर देखते है। तो आइये जौ की बुवाई के पीछे की कथा और उसका कितना आध्यात्मिक महत्व है जानते है।

पुराणो में कथा है । एक बार देवताओ की सभा में सभी मुख्य-मुख्य देवता उपस्थित थे । इसमें त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित पंचायतन देव भी हाजिर थे । वहाँ पर महत्वपूर्ण चर्चा होने वाली थी। उसी समय उपद्रवी असुर उपद्रव मचा दिये। राक्षस अपनी गंदी विद्या द्वारा सभा के उपर आक्रमण करना शुरु कर दिये। चारो दिशाओमें अंधेरा हो गया । उस समय समस्त देवगण की रक्षा के लिये देवाधिदेव महादेव देवी दुर्गा के सामने देखकर मुस्कराये और संकेत किये कि हे देवी ! आप अपने योग शक्ति द्वारा असुरो को पराजित करो। इनके अस्त्र-शस्त्र से त्रिलोकी की रक्षा करे।

भोलेनाथ देवाधिदेव श्री महादेव के संकेत मात्र से जगतजननी माँ भवानी दुर्गादेवी तत्काल अपने सिर पर स्थित केश को एक मिट्टी के पात्र में भर कर स्थापना करदी। इसमें से सर्व प्रथम अन्न रुपी जौ उगने लगा। जैसे-जैसे जौ अंकुरित होने लगा। त्यो-त्यो असुरो का उपद्रव शांत होने लगा। एक के बाद एक दिन व्यतीत होने लगा। जौ के अंकुर बड़े होते गये। इस प्रकार जौ में से नये दिन जौ के प्रभाव से त्रिलोक में पैदा हुआ राक्षसो की मायावी उपद्रव शक्ति हीन हो गया। सभी दैत्यो के शस्त्र-अस्त्र स्वयं ऋण हो गये । अर्थात् देव सभा में विराजमान इन्द्र, गजानंद गणपति, सूर्य, दिगपाल देवो राक्षसो के भय से मुक्त हुए। उन देवताओ में से सूर्य भगवान ने श्री महादेवजी से पूछे कि भास्कर ! दैवी दुर्गा जौ पैदा करके त्रिलोक की रक्षा की है। भगवान भास्कर ने कहा कि : अब इस जौ को जो कोई बोयेगा । जल देगा । उसके कार्य में कोई विघ्न नही आयेगा । चाहे पुरी दुनिया की आसुरी शक्ति मिलकर विघ्न डाले। तो भी देवी दुर्गा के अंश जौ की शक्ति से वहाँ पर आसुरी शक्ति प्रवेश नही कर सकते है।

हिन्दू धर्म के रीति-रिवाज नवरात्रि का पर्व श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण, रामायण आदि पाठ पुरःश्चरण, सत्यनारायण की कथा इत्यादि जप व्रत अनुष्ठान सत्र के प्रारम्भ में दो से तीन दिन पहले मिट्टी के पात्र में जौ उगाया जाता है। जो दो-तीन दिनमें अंकुरित हो जाता है। यह शुभ माना जाता है। अंकुरित होने पर पांच-सात दिन उसकी मूल सफेद और पत्ती हरी तो सुख समृद्धि का संकेत है। कई जगह पर जौ के स्थान पर गेहूँ लगाते है। यह अच्छी बात नही है। दोनो की ऊर्जा में अन्तर होता है। पूजा ध्यान, पंडाल, मंडप के द्वार के चारो तरफ चारो दिशा के द्वार पर रखना चाहिए । अर्थात् पूजा स्थान सुरक्षित हो सके। अंकुरित हुए जौ मे से अति पवित्र ऊर्जा शक्ति से पूजा स्थान पर कोई आसुरी शक्ति नही

आ सकती है । कई ऋषियो द्वारा जौ को अन्न बह्म के रुप में माना जाता है । अन्न की उत्पत्ति में जौ की प्रथम प्रजापति ब्रह्मा ने किया है । शेष जौ मे से दूसरे अन्न पैदा हुए है । अपने देश में कई प्रदेशो में नये घर के वास्तु प्रवेश में घडा रखा जाता है । इसके साथ जौ भी रखा जाता है। जौ साक्षात् जगत जननी माँ दुर्गाजी का स्वरुप है । अनुष्ठान के समय जौ के पास दीपक करना चाहिए । इसके बाद ही अनुष्ठान पूर्ण होता है । जौ को पवित्र नदी तालाब में विसर्जित करना चाहिए । जलशक्ति और श्री शक्ति दोनो एक दूसरे की शक्ति में मिल जाती है । जौ को वहाँ पर छोड देने से दुर्गादेवी नाराज हो जाती है । जीवन दुख दरिद्रता कष्ट आने लगता है । जौ को शुद्ध मानकर वहाँ पर जूता-चप्पल नही उतारना चाहिए । धूप-दीप चढाकर प्रसन्न करे । सत्कर्म की सफलता एवम् निष्फलता के बारे में जौ संकेत देता है । आयुर्वेद की द्रष्टि में जौ अधिक से अधिक मल्टीविटामिन का खजाना है । कई संतो के मतानुसार घर में लम्बे समय से दुख दरिद्रता, क्लेश, कंकास, उपद्रव आधी व्याधी उपाधी चालू रहने पर लोगो को जौ उगाकर नव दिन घर में रखकर नदी-तालाब में विसर्जित कर देना चाहिए । यह दुख को दूर करता है । कई स्थान पर जौ को कपडे में बाँधकर देवी को वस्त्र अर्पण करते है । जौ के बारे में अधिक जानकारी दी जा सकती है । लेकिन इतनी महिमा जाने तो अच्छा है । इसका महत्व और रक्षण भी करे । जितने दिन का अनुष्ठान हो उतने कुंडे में जौ बोना चाहिए।

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष का समैया

23-1-2026 - 27-1-2026

इस समैया के उपलक्ष्य में पूर्व के मध्य धार्मिक, सामाजिक जैसी अनेक क्रिया-कलाप अपने पू. संतो हरिभक्तो के माध्यम से निम्नानुसार होगी ।

सामाजिक क्रिया कलाप

- वर्तमान तथा भविष्य की चुनौतियो और जीवन शैली जागृति सेमिनार ।
- स्वास्थ्य और स्वच्छता का जीवन में समावेश ।
- शिक्षा के लिये जागृति - पुस्तक वितरण ।
- पर्यावरण और मानवजीवन में समन्वय ।
- जरुरत मंदो को अन्नदान तथा सरकारी चिकित्सालयो में रोगियो के लिये भोजन वितरण व्यवस्था ।
- चतुर्थ श्रेठी और दैनिक आधार पर काम करने वाले कर्मचारियो का सम्मान ।
- रिसायकिलिंग और बेस्ट प्रबन्ध के विषय में जागरण, जानकारी और जीवन में समावेश करना ।

धार्मिक क्रिया कलाप

- सभा (शिक्षापत्री सभा) ।
- कीर्तन सभा ।
- मंत्र लिखना ।
- श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धुन ।
- पदयात्रा ।
- शिक्षापत्री पाठ ।
- शिक्षापत्री वितरण ।
- शिक्षापत्री रथ ।
- समूह महापूजा ।
- बाल शिबिर, युवा शिबिर ।
- हरि मंदिरो में पुस्तकालय बनाना ।

इस समैया के अवसर पर आप सभी स्वैच्छिक नियम ले सकते है । जैसे शिक्षापत्री पाठ, मंत्रलेखन, दंवडत, प्रदक्षिणा इत्यादि ।

(इस अवसर पर आप का सहयोग स्वागत योग्य है । कोठार आफिस में जमा करके पक्की रसीद प्राप्त कर सकते है ।

श्रीहरि के ६वे, ७वे और ८वे वंशज के मुख से आर्शीवचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. बड़े महाराजश्री, श्री नरनारायणदेव के २०३ के पाटोत्सव के अवसर पर, अहमदाबाद मंदिर, ता. ०२-०३-२०२५ : आदरणीय संतो एवं प्रिय सत्संगि बंधुओ, स्वामीजीने तो बात बतायी २९ मार्च, यह तारीख क्यो रखी गयी है उसके बारे में कुछ कहे । जगत में ही क्या ? पूरे ब्रह्मांड में महाराज का हस्ताक्षर, महाराज के हस्ताक्षर एटर्नी है । लीगल डाक्युमेन्ट है । उपदेश का पत्र नही है । इसमें संवत लिखा गया है । इसमें भी एक रुपये के स्टेम्प पर अपने छडीदार कुबेरदासजी पावर ओफ एटर्नी मालिक का नाम लिखा है । इसके पिछले भाग में अंग्रेज अधिकारी का हस्ताक्षर किया हुआ है । इस लिये महाराज को अंग्रेज अधिकारी के सामने हस्ताक्षर करना पडा था । सहजानंद के हस्ताक्षर के साथ तीन साथियो के हस्ताक्षर उस पर है । यह अद्‌भुत वस्तु अपने पास है । इस कागज में संवत नही है । लेकिन २९ मार्च लिखा होने के कारण यह तारीख पसंद की गयी है। कई लोग दर्शन करने आते है । उन्हे ज्ञात नही होता है । उनको यह अवगत कराना चाहिए । ताकि सत्संगियो को लाभ मिले ।इस उद्देश्य से यह तारीख पसंद की गई है।

आज के दिन की क्या बात करें ? जिसका अनंत जन्मो का पुण्य उदय होता है । उसे ही इस नरनारायणदेव के मंदिर की सीढीयो पर चढने की प्रेरणा मिलती है । आपको ज्ञात नही होगा । एक सत्संगि के रुप में हमे जितना नरनारायणदेव का महात्मय है । उससे ज्यादा परोक्ष में कितना महत्व है । इसका साधारण उदाहरण देते है । शायद पहले कहे भी होगे । अपने यहाँ जब ८१ में जब द्विशताब्दी महोत्सव मनाया गया था । तब डोंगरेजी महाराज की पारायण रखी गयी थी । प्रभुदास जडिया चुस्त वैष्णव के यहाँ पर रहे थे । प्रभुदासने उन्होने कहा कि ? तुम्हे यदि कल्याण चाहिए तो नरनारायणदेव का दर्शन करने प्रतिदिन आना । यहाँ पर साक्षात् परमात्मा विराजमान है । ये डोंगरेजी के शब्द है । तब से प्रभुदास देव का दर्शन करने के लिये प्रतिदिन आने लगे । जब आचार्य महाराजश्री का उपनयन, उस समय लालजी महाराज का उपनयन संस्कार हुआ । उस समय उन्हे आशीर्वाद देने हार पहनाने के लिये आये थे । तब दुसरे कहे थे कि उपनयन की विधि पूरी होने पर नरनारायणदेव का दर्शन करने के बाद उन्हे घर पर ले जाना । यह बात उनके रिकोर्डिंग में भी है । नरनारायणदेव की जितनी महिमा समझे कम ही है।

कल अच्छी इवेन्ट है । जिस प्रकार अपना मंदिर विश्व में अपने सम्प्रदाय का प्रथम मंदिर है । उसी प्रकार लंदन में अपने सम्प्रदाय का सर्व प्रथम शिखरबद्ध मंदिर में घनश्याम महाराज पधराये गये है । अपने वाली पूर्णिमा को ५० वर्ष पूरा हो जायेगा । इस पर बडा उत्सव होने वाला है । वहाँ के हरिभक्त विशेषकर युवक कितने सक्रिय है । आप यु-ट्युब विल्सडन साईट में देखेगे तो पता चलेगा । इस अवसर निमित ७० जितने युवक संकल्प करके अपने सायकिल के साथ आये है । वह सायकिल चलाकर यहाँ से भुज नरनारायणदेव के दर्शन हेतु जायेगे । इन युवको को धन्यवाद देता हूँ । सूचना भी है कि आप लोग सावधानी पूर्वक जाये । हाईवे के उपर ट्रैफिक बहुत खराब है । इस लिये आप लोग सावधानी पूर्वक ड्राईव करे।

नरनारायणदेव की अमी द्रष्टि सम्प्रदाय के उपर है। हमेशा बनी भी रहेगी । ऐसी प्रार्थना है । नरनारायणदेव की महिमा वचनामृत के पृष्ठ पृष्ठ पर लिखी है । यह समझने की आवश्यकता नही है । सभी जानते है । जो भी भाग्यशाली होते है । वही इस महिमा को समझ पाते है । यह महिमा उसे अंतर में हमेशा दृढ होती रहती है । ऐसा श्रीजी महाराज के चरणो में प्रार्थना है।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज के पाटोत्सव के अवसर पर नरनारायणदेव के सानिध्य में जब प्रत्येक छोटे-बड़े गाँव से विदेश से इतनी बडी संख्या में हरिभक्त देव दर्शन के लिये उपस्थित है। तभी प्रात: मैं अभिषेक में आ रहे थे । पाटोत्सव के दिन दिखायी देते है । नरनारायणदेव की झाँकी के लिये शायद आधे सेकेन्ड या एक सेकेन्ड देव का दर्शन हो जाने पर पूरे वर्ष पावर मिलता था । अहमदाबाद देश में इतने हरिभक्त, हमने इतनी सुविधा देखी थी। देव का दर्शन हो इस लिये मंदिर आते है । तब अच्छी खुशी मिलती है । ऐसे भाविक हरिभक्तो का समुदाय और संतो का समुदाय मिला है।

यह देव का बल है। और देव के द्वारा हम सब को प्राप्त हुआ है । इसके द्वारा ही सम्प्रदाय में बडे काम पूर्ण होते है। भगवान ने कृपा करके यह सम्प्रदाय हमे दिये है। इस समय अपना कर्तव्य बनता है। कि सम्प्रदाय के लिये अपनी शक्ति के अनुसार क्या कर सकते है। तन, मन, धन से हमे सेवा करते है । हम अपने विचार एवम् शक्तियो समय जिसका भी सहयोग कर सकते है। वह आप अवश्य प्रदान करते ही है । प्रात: हमने देखा, नारायणपुरा के हरिभक्त हो, अहमदाबाद के पूर्व विस्तार के हो । या अगल-बगल के गाँव के हरिभक्त हो । मंदिर में ट्रैफिक की सेवा, लोको को भोजन खिलाने की व्यवस्था हो या अन्य व्यवस्था हो। अत्यंत प्रेम एवम् श्रद्धा से सेवा देते है। यह प्रसंशा करने योग्य बात है। किसी को कुछ कहना नही पडता है कि आप यहाँ पर तैनात हो जाये । वे देव तथा हरिभक्तो को खुशी के लिये खडे रहते है। किस प्रकार से यहाँ पर आने वाले हरिभक्तो की व्यवस्था देखी जाती है। उनकी भावना के सामना हमें और क्या करना चाहिए ?

अभी महंत स्वामीने कहा है कि मंदिर में नरनारायणदेव का रसोई घर बन रहा है। यह अभी आरम्भ है। बाद में कई वर्षो के लिये मास्टर प्लान है। छपैया प्रोजेक्ट तो चलही रहा है। शहर के कई भागो में नये मंदिर का निर्माण चल रहा है । कालुपुर मंदिर के अर्न्तगत, महाराजश्री के आज्ञा में रहकर संतो-हरिभक्तो द्वारा इतनी सुविधा युक्त व्यवस्था मिल रही है तो इस समय हम सभी को मिलकर तन, मन, धन से अपनी शक्ति के अनुसार जो कुछ भी सेवा हो वह करे । भगवान के चरणो में ऐसी प्रार्थना है कि आप सभी को शक्ति प्रदान करे।

शिक्षापत्री के २०० वर्ष का ५ दिन का समैया आ रहा है। यह समैया अपने नरनारायणदेव के २०० वर्ष के ''पर्व'' के साथ **Compare** (तुलना) नही करते, 'पर्व' से विशेष भव्य रुप में मनाना है। अहमदाबाद देश का इतिहास रहा है। प्रणालिका भी रही है। अपने प्रत्येक उत्सव की तुलना में अगला उत्सव दो गुने भव्य रुप में मनाया जाता है। यह प्रणालिका पीछे नही गयी है। इस प्रथा को चालु रखकर उत्सव का प्रबन्ध करना है। यह समैया हम सभी का है। समैया का मुख्य उद्देश्य हम सभी के लिये है। ''सर्वजीव कल्याणकारी'' प्रत्येक जीव के कल्याण के लिये है । अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के पास शिक्षापत्री द्वारा स्वामिनारायण सम्प्रदाय का सिद्धान्त पहुंचे।

महाराजने कहा है कि सत्संग घटे या बढे यह हमारी ईच्छा से होता है। जब भी अवसर आता है। तब भाग लेते है। तथा सेवा देते है। अंत में पाटोत्सव के दिन देव के दर्शन की विशेष महिमा कही है । प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री : आप सभी के मुख को देखकर अधिक खुश हुए। जहाँ तक दृष्टि जा रही है। ये संत और हरिभक्त हमारे सच्ची पूंजी है। यह वास्तविकता है। **Seriously** कह रहा हूँ। आप लोगो से मस्ती करना नही है । पैसा तो मै वैसे भी ले सकता हूँ । बनासकांठा, धोलका देश, राजस्थान, बायरन, साउथ जर्सी लंदन कहाँ-कहाँ से हरिभक्त आये है। और संत लोग भी धामो-धाम से आये है। भगवान के भक्तो को देखकर हृदय प्रफुलित हो जाता है।

यज्ञप्रकाश स्वामीने अभी सत्यबात बोले है। एक भक्त आया । मैने कहा कैसा है । तो वह बोला नरनारायणदेव का आशीर्वाद है। मैने कहा अच्छा है। यदि वह कहता आप की कृपा है तो मैं उसे कार्यालय में बैठने नही देता। हम जिसकी कृपा से खडे है। वहाँ आप दूसरा सहारा क्यो बना रहे है। अभी वाडी में युवक और संत सभी थे । तभी हमने कहा था । दुनिया में उल्टा कान

पकडने की आदत अधिक है। वैसे करेन्ट लगाता है। इसने इसको कहा वह दूसरे से कहा दूसरा अन्य: से अच्छा है कि आप जिसके सामने बैठे है। (नरनारायणदेव) उसे देख लो । धागे को फँसाने से क्या लाभ है ? यह महाराजने सिखाया है । आप विचार करे मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, गुणातीतानंद स्वामी आदिक ५०० परमहंस थे । इतने हरिभक्त थे । कितने हरिभक्त थे और नही भी थे ? आचार्य भी थे । कही पर आता है कि यह हरिभक्त गुणातीतानंद का शिष्य था । या ब्रह्मानंद का शिष्य था । है तो अवश्य कहे । मुझे पढ़ने से कही रह गया हो कि यह फलाने का शिष्य है । या अमुक आचार्य का शिष्य है। कही पर मिलता है ? साँतवी पीढी में मै हूँ। आठवी पीढ़ी के (प.पू. लालजी महाराजश्री) है। मैने नही सुना है। कि यह इनके शिष्य है। नया नही करे। यह बडे से बड़ा पुण्य है। नवी रेखा बनाना नही है। २१२ कम पड़ता है ? मनुष्य का दिमाग ऐसा ही है।

एक छोटी सी बात बता रहा हूँ। मै अति विश्वास भी करता हूँ। कई बार बोला भी हूँ। इस सत्संग में इस दुनिया में लगातार दया बहती है। यह मनुष्य अपना अधिकार मान लेता है । यह समझने वाली बात है । आप का स्टोर है । दुकान हो । बाहर कोई व्यक्ति खडा हो । उस व्यक्ति को आप कभी पानी या धन देते है । यह क्रम दो महीने तक चलने दे । किसी दिन मना करने पर वह कहेगा मेरा पैसा लाओ । आप कहे कि हमने आज दूसरे को दे दिया है। तो वह कहेगा मेरा क्यो उसको दे दिये । दूसरा देना था । यह मानव की प्रकृति बन जाती है। घर के अंदर, परिवार में ज्वाइंट परिवार में रहने पर आप देखेगे की यह तो इतना कहेगा ही'' **By Default** आता है। जिस वस्तु में अपना अधिकार नही है। उसमें अधिकार आ जाता है। यह संसार की गति है।

एक वस्तु में मुझे गौरव है । लालजी महाराजने कहा कि सच्ची बात है । किसी भी प्रकार के स्वार्थ, अपेक्षा शर्त के बिना अपना सम्प्रदाय में इतने अधिक हरिभक्त, देव की एक झलक के लिये । इतना अधिक मेहनत करते है । धन्यवाद है । सबसे अधिक प्रेम इन्ही से मिलता है । नरनारायणदेव देश में सबको अरस परस की गुण बुद्धि है । यह मैं सही कह रहा हूँ । पैसा या अन्य किसी वस्तु के लिये नही है । इतने अधिक हरिभक्त आये है । आप ने रुपया भी दिया । इतने लोग के आने से संतो को तनाव हो जाता है । क्या भोजन खिलाया जाये ? आप ऐसा न सोचे कि ये संत लड्डू खाकर सो जाते है । कुछ लोग ऐसे होते है जो संतो की गलत इम्प्रेशन बना देते है । अपने बड़े ज्ञानी, ध्यानी, मानी मानते है । हम साधु से आगे है । ऐसा है तो आप यहाँ पर आगल बैठ जाये । तब ज्ञात होगा । मानलो कभी ऐसा हो कि आप मेले मे गये हो । तथा रास्ते से फोन करे । हम लोग इतने बजे इतने लोग भोजन करेगे । भोजन बना देना । संत प्रेम से बनाकर खिलाते है । तथा बाद में शिकायत भी सुन लेते है । ये लोग आप के रिश्तेदार तो नही है । अपने रिस्तेदार से कहे कि इतने लोग इतने दिन के लिये आयेगे, रहेगे और भोजन करेगे । दो दिन के बाद रिश्तेदार कहेगा ? आप कब जाने वाले हो ? लेकिन बात यह है कि संत गाँव तथा हरिभक्तो पर इतना ध्यान देते है । इसमें स्वार्थ का भ्रम समाप्त कर दे । संतो एवं हरिभक्तो को देव की ममता है । इसमे किसी प्रकार का स्वार्थ नही है । सबसे बड़ा लाभ सम्प्रदाय का यही है । यही महाराजने सिखाया है । यह परम्परा जो पालता है । वह भगवान को वास्तवे में पहचानता है । जिसे कुछ भी स्वार्थ नही है । ५% वाले ही लोग भजिया खाना पसंद करते है । या लड्डू अच्छा लगता है । इसलिये आते है । खाये कोई रोक नही है बनता ही है । यहाँ पर अधिक ही तैयार किया जाता है।

जरा आप सोचे आप विदेश से अपने पैसे से टिकट खरीदकर आये है । गाँव से किराये वाले साधन से आते है । यह कोई सुनी-सुनाई बात नही है । बल्कि पीढी दर पीढी सत्संग का वारसा देते है । और ऐसा ही वातावरण दे । यह अपने संप्रदाय की बड़ी पूंजी है । बिना स्वार्थ के ये सब जुडे रहते है । प्रोजेक्ट तो होता है ।आप धन देते है । संत परिश्रम करते है । अंत में क्या है ? तो अंत में ये देव है । देव के अलावा कुछ भी नही है । आज मै इस लिये बता रहा हूँ । यह फलाना का शिष्य हमारा कोई शिष्य नही है । केवल देव का रहे । भगवान का बने । आप सभी भगवान के है । इस लिये आये है । इसका आनंद है ।

लंदन से आये युवको सायकिल चलाकर यहाँ से भुज जायेगे । इसके प्रोजेक्ट मैनेजर यहाँ पर बैठे है । कह रहे है कि पहले दिन १५० किमी तय करेगे । मैने कहा आप टूट जायेगे । क्योकि ३ डिग्री से ३० डिग्री के तापमान पर आ गये है । किसी के लिये मलहम लाकर हमे आना पडेग । हंसने वाली बात साईट में रख दे । इस सत्संग में क्या है जो कि आप को आकर्षित करता है । आप को कोई हार फूल नही देने वाला है । आप को अपने पैर को कष्ट देना है । पैसा आप देते है । संत श्रम करते है । मालपूवा-लड्डू बनाकर संत आप को खिलाते है । वर्षा में भजिया की माँग भी लोग करते है । धर्मस्वरुप स्वामी तथा नारायणवल्लभ स्वामी बड़े संतो को ज्ञात है । जैसी माँग वैसी पूर्ति देनी पडती है । सही बात है न संतजी ? आप गाँव में गये ही होगे । अपने गुरु के साथ किसी हरिभक्त को चुरमा चाहिए । तो चुरमा बनाना पडता है । दोपहर के बाद गुटर गुटर हो जाता है । नाम भगवान का खाना अपने है । अपने नरनारायणदेव का कितना अच्छा है । आज पाटोत्सव है । अब प्रागट्य दिवस आयेगा । जलसा करना है । कोई भूखे रहने वाला नही है । सभी जन्म जयंती आती है । भूख से परेशान होना पडता है । शिवरात्रि में फलाहार आता है । फिर कहा आया । रामनवमी आया तो फलाहार । जन्मदिन केक और बेक काटते है । पीजा बनाते है । मूल बात यही है कि भगवान की प्रिय रहे और तपस्या करे ।

मूलत ! अपनी प्रणालिका ऐसी थी । उस समय फलाहारी आटा नही था । फलाहारी आटे का वायरल हुआ तो सभी लोग हंसे थे । भूल में क्या है मान ले किये आज रविवार है । आधी दुकाने बंद रहती है । सरकारी कार्यालय मे छुट्टी रहती है । पहले रविवार का **Concept** नही था । अर्थात् एकादशी, रामनवमी, जन्माष्टमी, पूनम जैसे दिनो पर खेत में बैल से जुलाई भी नही करते थे । पशुओ को भी रेस्ट, भाई-बहन को रेस्ट सब मिलकर मंदिर जाते थे । परिवार का दिन रहता था । यह पन्द्रह दिन पर आता था । अब शनि-रवि को होली डे बना दिया गया है । हम लोगो को भगवान जैसे भगवान मिले है । अब तो फलाहारी आटा आ गया है । तो किसी को कोई तकलीफ नही होती है ।

स्वार्थ के बिना यह सब होता है । कितने मंदिरो का निर्माण होता है । रायसण में जगदीशभाई, निकोल में हो, दूरे स्थान पर हो हमारे पास से चेक ले जाये । आप का है आप को दे देते है । नरनारायणदेव के दानपात्र में आप लोग ही डालते है ।मुझे क्या करना है ? मै किसी दिन गिना भी नही और चाभी भी नही रखता हूँ । दानपेटी के लिये हरिभक्तो को कमेटी है । जो देखते है । उन्हे दिया गया है । मेरा या संतो का अधिकार नही है । यह पारदर्शिता है । नरनारायदेव के प्रताप से यह सब होता है । हरिभक्तो के लिये सुविधा मिले इसका हमें ध्यान रहता है । संतो का ध्यान हरिभक्त को लिये है । यह धाम है । यहाँ से आगे कहाँ जाना है ? मुझ से आकर कहे । तो भी कुछ लोग कहते है । अब ले जाये तो अच्छा है । क्या करेगे ? यहाँ पर इतना दुःखी है । तो इसे अपने से कहे । क्या दुःख है ? दुःख कुछ भी नही है । अब अधिक हो गया है । यहाँ पर अधिक हो गया । तो वहाँ पर दुःखी होकर कहेगे ले जाओ पीछे ।

आज शिक्षापत्री की बात हुई । अति महत्व की बात है । हम द्विशताब्दी महोत्सव मनाये । आप मे से कई लोग आये थे । कौन सा वर्ष था । ८१ बराबर है न ? मै नौ वर्ष का था । तब प्रभात फेरी करते थे । उस समय की बात है । अब शिक्षापत्री का उत्सव आया । किस वर्ष मे ? छब्बीस में बीच में कितने वर्ष हुए ? ४५ बराबर ? महाराज छपैया में जन्म लिये उसके बाद वन विचरण के लिये अपने घर से प्रयाण किये थे । वनविचरण के बाद आप जिस सम्प्रदाय मे बैठे है । इसके प्रसादी के कई गाँव, उत्तर गुजरात, कच्छ, काठियावाड और अन्य जगहो पर धुमे थे । वनविचरण के अनुभव के बाद गाँवो का अनुभव किये । इस सबका निष्कर्ष ४५ वर्ष का दिये है । विचार करने वाली बात है । वनविचरण करके १५ वर्षो में महाराज -

लिखामि सहजानंद स्वामी सर्वान्निजाश्रितान् ।
नानादेश स्थितान् शिक्षापत्री वृतालय स्थितः ॥

शिक्षापत्री लिखकर ऐसे नही रखे ? ४५ वर्ष के अनुभव का सार दिये है ।

सच्छास्त्राषतं समुद्श्चत्य सर्वेषा सार मात्मना ।
पत्रीयं लिखिता नृणामभीष्ट फलदायिनी ॥

संसार मे जितने अच्छे शास्त्र है। शास्त्र नही, अच्छे शास्त्र जो भगवान की तरफ अग्रसर करे। राम की तरफ ले जाये। शेष कुछ शास्त्र गाँव की तरफ ले जाते है। ऐसे भी शास्त्र होते है। पूरा समुद्र समा जाये इतने अच्छे शास्त्र है। सभी शास्त्रो का सार निचोडकर अमृत प्रदान किये है। यह पत्रिको जो मैने लिखी है। यह अच्छा फल देने वाली है। ये महाराज के शब्द है। यह कब बोले है ? ४५ वर्ष के अनुभव के बाद। अब तो आजकल के निम्न लोग आये है। वे भगवान को भगवान दिखाना चाहते है। ''सम्प्रदाय अच्छे से काम नही कर रहा है। ऐसा कही पर होता है।'' हाँ भाई ! आप जो बोलेगे वही होगा ? भगवान आप के लिये जन्म लिये है। ४५ वर्ष के मध्य एक महाराज को सेवाराम मिले थे। वचनामृत में पहला उदाहरण सेवकराम का आता है। वह विचार हुए तो हजार सोने की मुहर उनके पास थी। सेवा करने वाले कोई नही थे। महाराज दो दया आ गयी। उनकी सेवा किये। वह महाराज को कभी भी अन्न या धन नही देता था। महाराज अपने लिये गाँव से भिक्षा माँग कर लाते और जीवन व्यतीत किये। वह पुनः अधिक स्वस्थ हो गया। जब गया तो एक मन वजन महाराज से उठवाया था। कुछ दिन के बाद महाराज उसे कृतध्नी जानकर उसका साथ छोड दिये। यह बात ४५ वर्ष के बाद शिक्षापत्री में लिखे है। कृतघ्न संगसत्यत्यक्यो... कृतध्नी का साथ छोड देना चाहिए। यह समझने वाली बात है। आप इस सम्प्रदाय का अवलोकन करके विचार करे। शोर्ट साइटेड नही करे। कंठी पहने, चाँदला करे, मंत्र के अर्थात् पूरा हुआ ऐसी बात नही है। आप पूरा परिदृश्य देखे कि किन किन वस्तुओ के पीछे किस तरह की आज्ञा दिये है। उसका सन्दर्भ देखे। अपने जीवन के लिये यह एज्युकेशन प्रोसेस है। उपदेश देना मुझे नही आता है। जो मुझे दिख रहा है। बता रहा हूँ। भगवान सभी अनुभव करके वैसे उन्हे अनुभव लेने की कोई आवश्यकता ही नही है। फिर भी अपने अनुभव का सार दिखाये है। ऐसा करने पर ऐसा परिणाम मिला है।

भगवान हम लोगो के लिये काँटा और कंकड की चोट सहन किये है। मै, संत आप सभी भाई-बहन, बच्चे-बच्चियो जो हम लोग सुखी है। उसके पीछे भगवान है। यह कभी भूलना नही चाहिए। निरन्तर स्मरण करते रहना चाहिए। शिक्षापत्री के पढ़ने का नित्य आदेश इस लिये है कि कुछ लोग कहेगे कि कल तो इसको पढे थे। इसका इसमे क्या आयेगा ? २१२ ही है २१३ तो नही होने वाला है। यह तो मौखिक याद है। कहे तो संस्कृत मे बोल दे। पाँच श्लोक का प्रतिदिन वचन करा चाहिए। अर्थात् अनुसंधान छूटना नही चाहिए। शिक्षापत्री की महिमा कहने जैसी नही है। यह मुझे याद आया। इस लिये कर रहा हूँ। हम सभी भाग्यशाली है कि हमे भगवान मिले है। सत्संग मे जन्म मिला है। वे लोग कम भाग्यशाली है जो लोग इस परम्परा से नही जुडे है। इसी लिये समैया करना है ताकि दूसरे को भी ज्ञात हो। दो आज्ञा पालन करने पर सुखी होगे। शिक्षापत्री मे कुछ कठिन नही लिखा गया है। मानवता की बात आती है। समैया अपने लालजी के कथनानुसार किया जायेगा। हम है, संत है। आप है। ये सब तो चलता रहता है। इस सम्प्रदाय मे कभी भी तावडा और फावडा, नगारा तथा तगारा बंद होने वाला नही है। किसे के बाप में दम नही है कि इसे कम कर सके। मुझे मेरे भगवान पर भरोसा है। उत्तरोत्तर प्रगति है। यह हम सभी की खुदारी है। जब खुद्दारी चली जायेगी। तो हम सभी नपुंसेक हो जायेगे।

वर्ष मे दो बार दर्शन में नरनारायणदेव के चरण स्पर्श का लाभ मिलता है। यह आप लोगो के लिये चरण स्पर्श करते है। अपने लिये नही करते है। माँग- माँग कर क्या मांगोगे ? मुझे माँगना नही आता है। चरणो में सिर रख देने से कब कुछ वेक्युम हो जाता है। कुछ याद नही रहता है। क्या एक्सप्रेशन है। उसके लिये कोई शब्द नही रहता है। (दिव्य अनुभूति)

देव के दर्शन के लिये अपना परिवार यहाँ पर आया है। दूसरे देश विदेश के हरिभक्त देख रहे है। केवल भगवान को जीन मे आगे रखना। यजमान परिवार पूजन और जानकारी वाला है। पुराना उपयोगी है। दो परिवार एक साथ हो गये। हमने कहा कोई कष्ट नही है। हम जैसा बोलेगे वैसा ही होगा। इस के बाद दो आये है। आते समय तीन करे। पैसे की कोई परवाह नही है। भगवान के दर्शन का इतना लाभ मिलता है। कितने वर्षो से लिखा हो तो उसमें कई लोग शुभ दाम मे चले जाते है। शेष वासना रह जाती है। कुछ वृद्ध हो जाते है। मान लो हमे ४० वर्ष जीना

है तो कोई सुरक्षा है ? देव का ऋण कई जन्मो मे भी भरा नही जा सकता है । यह ऋण दिमाग में गुँजता रहता है ? वैसे भी हमारा दिमाग भंगार है । इस लिये महंत स्वामीने जो बात की है । उसका उत्तर निकालो । एक बार में लेलो कार्य पूरा हो । बापजीने बात कही, जो यजमान तैयार हो उन्हे ही ले लो । फिर नये हरिभक्तो को लाभ मिले । नये हरिभक्तो मे उत्साह होता है । पुराने मे भी उत्साह होता है । कई बार हरिभक्तो की परिस्थिति में परिवर्तन आ जाता है। हमे खराब दबाव नही बनाना चाहिए । हरिभक्तो के व्यववहार को संसार में अधिक बचाना चाहिए । देव का पूरा अवसर मिले । इस पर ध्यान देकर परस्पर समझदारी रखकर काम करना चाहिए । और ऐसा ही करना है ।

अब आरती का समय हो गया है । कुछ लोग आगे पीछे हो रहे होगे । कोठार में जाकर शिकायत करेगे । आरती क्यो नही हो रही है ? पिछली बार कोई गया था । फिर हमारे भगतने समझाया कि जो भोपू मे बोल रहे है । उन्हे समझाओ । अपने बाप को । आप विचार करे, शास्त्र की गाणित अलग है । मुझे ध्यान नही है । यह महंत स्वामी है । हमारे भी ब्रह्मा के कई दिन तक तपस्या किये । तब भगवान का अवतार हुआ । हम सीधे देख रहे है । दो मिनट का विलम्ब नही होना चाहिए । परदे खीच मत देना । हरिभक्तो के लिये कहता हूँ । आप को भी श्रद्धा रखना चाहिए । नियम वाला होना अच्छी बात है । लेकिन नियम किसके लिये है ? भगवान के दर्शन के लिये है । ब्रहमचारी महाराज अन्दर चंदन का वाधा लगाते हो तो उसे टेढा-मेढा करना यह खेल नही है । देव कोई खिलौने नही है । भगवान है । देव जैसा पवित्र होकर देव की सेवापूजा करना महाराजने लिखा है । शिकायत करने वाले को हमे यहाँ से बाहर करना ही पडता है । और बोलना पडता है कि आरती १० मिनट बाद में होगी जाये ।

आप लोग कैसा मजाक करते हो । सिर से साढे तीन बाल है फिरभी जेब मे कैची लेकर चलते है । चला गया है तो नया बनवाओ । आप लोगो को तो होता ही नही है । (संतो को) भगवान को भाव से वाधा वस्त्र से व्यवस्थित रुप से सेवा न हो इससे समझौता नही किया जा सकता है । इस लिये कहा जाता है कि खडे होकर तपस्या करो । अधिक सुविधा मिल जाने से बिगड गये है । लगातार दया करने पर लोग बाद में अधिक मान लेते है । आज के दिन की बात नही कर रहा हूं । लेकिन चंदन का वांधा हो ब्रह्मचारी अंदर क्या करते है ? आप उसे नही जान सकते है । हम अंदर जाते है । इस लिये पता चलता है । अधिक मेहनत होती है । शुद्ध होकर सेवा, पूजा, करना यह सरल नही है । अब विशेष ध्यान देना है कि यह समझदारी की बात है ।

भगवान कई जगह गये थे । लेकिन मुझे सम्प्रदाय के बाहर कही पर जाने की ईच्छा नही होती है । सम्प्रदाय की मर्यादा मे बड़े हुए है । दर्शन की मर्यादा में हमेशा रहे है। वास्तविकता में हमे अधिक मिला है । मेरा इतना ही कहना है कि । शिकायत के रुप मे नही कहकर शिक्षा के रुप मे कहता हूँ । शायद आरती के लिये विलम्ब हो । किसी दिन ऐसा नही करना चाहिए कि भगवान के दर्शन हेतु आये है । हमे दर्शन नम्रता से करना चाहिए। यह दर्शन की विधि है । जेब से खर्च कर तीर्थाटन करना ऐसा लिखा गया है । अब मुझे विस्तृत में नही जाना है । आरती करने के लिये खडे हो जाईये । सहजानंद स्वामी महाराज की जय ।

हरिभक्त के लिये देव का दशांश विशांश धर्मादा देना चाहिए देना चाहिए ही

आप सभी हरिभक्त जानते ही है । श्रीहरिने शिक्षापत्री में धर्मादा के बारे में धर्मादाय विषय श्लोक संख्या १४७ की आज्ञा का अक्षरसह पालन करे । पालन करने से अपने जीवन में आकस्मिक दुःख नही आता है । जो नही करते उनका सिर पर रहता है । अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव देश के सभी हरिभक्तो अपने आप का दशवाँ भाग अवश्य भरे । इसमें शर्तचूक देव नही रखते है । वे लगातार ध्यान देते है । आप जागृत नागरिक हरिभक्त बनकर शुद्ध धर्मादा देने का निर्णय ले । जो आप के हित में है ।

अपने हरि मंदिरो तथा प्रसादी के स्थल सादरा-वासणा देश, श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर

– बिपीन एम. पटेल (कालीगाम)

मंगलमूर्ति महाप्रभु श्री सहजानंद सुखरुप, भक्ति दर्म सुत श्रीहरि समरु सदैव अनूप ।

श्रीहरि गुजरात की धरा को अपने चरणो से स्पर्श करके पावन किये है । गुजरात में गांधीनगर के पास ''सादरा-वासणा देश'' की पवित्र धरा का दर्शन करते करते अगले लेख के ५ वे परढोल और सोनारडा के प्रसादीभूत गाँव के महात्म का आनंद ले ।

स्वयं दर्शन करने के पश्चात् लवारपुर के पवित्र दर्शन, महात्म का लाभ उठाये ।

(५) लवारपुर : सादरा-वासणा देश के परढोल और सोनारड गाँव का दर्शन करके हम गिफ्ट सीटी की तरफ से गाँधीनगर आते है तो बीच में लवारपुर गाँव आता है । गांधीगनर से १० मिनट मे लवारपुर जा सकते है । कुल दुरी १० की.मी. है । रास्ते में गांधीगनर मेट्रो ट्रेन, गिफ्ट सीटी का दृश्य देखकर अच्चा लगता है । साबर गंगा के उपर पुल क्रोस करके नदी के पूर्वी भाग में रमणीय लवारपुर गाँव है ।

गाँव में प्रवेश करने के दो रास्ते है । एक तालाब की तरफ से गाँव में जाते है । दूसरे तरफ मुख्य सडक आगे जाने पर हाईस्कुल की तरफ से गाँव का मार्ग जाता है । गाँव के घर की रचना देखकर सुखी गाँव लगता है । लगभग ४०० परिवार वाला गाँव है । सत्संग से १३० परिवार जुडे है ।

इस गाँव में सत्संग कैसे प्रारम्भ हुआ । यह रसप्रद बात है । खेरोल गाँव की दो बच्चियो की शादी लवारपुर गाँव में हुई । यह बात अधिक पुरानी है । ये बहने स्वामिनारायण भगवान के आश्रित परिवार से होने के कारण वह बचपन से सत्संग के अमृत से पालन हुआ था । यह बहने अपने साथ महाराज और सत्संग को लाई थी । परिवार में सत्संग की सुगंध फैलाती रही । धीरे-धीरे पूरा परिवार सत्संग में रंग गया । अपने घर में महाराज की छोटी मूर्ति लाकर घर के मंदिर में स्थापना की थी । श्रीजी महाराज की भजन करती थी । धीरे-धीरे सत्संग की सुगंध फैलती गयी । परिवार के लोग आज से ८० वर्ष पूर्व एक घर लेकर मंदिर बनाकर घर में मिलकर भजन करने लगे ।

सोना में जैसे सुगंध मिल जाये । उस प्रकार गाँव के भक्तो ने स्वामिनारायण भगवान के महान संत महानुभावानंद स्वामी कभी कभार कथा सत्संग कराने के लिये आते थे । इस प्रकार गाँव में एक परिवार से लेकर गाँव के कई लोग सत्संग मे जुडे । गाँव के लोग भी अपने मंदिर में दर्शन हेतु आने लगे । जिससे संतो के साथ निकटता बढ गयी । अब तो पू. देवचरणदासजी स्वामी (लीमडावाले संत मंडल वाले) भी वर्षा और गर्मी में आकर कथा का लाभ देने लगे । सत्संग का प्रसार होने पर हरिभक्तो ने स्वामीजी को मंदिर बनाने का आग्रह करके चोरा के पास जो प्राचीनमंदिर था । वहाँ पर अन्य बिकने वाले घरो को खरीदकर मंदिर का जीर्णोध्धार करने का निश्चय किये । आज से २५ वर्ष पूर्व भव्य मंदिर बनवाया गया था । पू. देवचरणदासजी के अथक प्रयास से मंदिर में (प.पू. बडे बापजी) के समय प.पू. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा १९९५ में श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा की गई । इस मंदिर में आज भी हरिभक्त सत्संग का सुख श्रीजी महाराज दे रहे है ।

पू. देवचरणदासजी स्वामीने गाँव में सत्संग का अधिक विकास किये । उन्होने देखा कि गाँव में शिक्षा का प्रसार होना चाहिए । तो स्वयं कथा से प्राप्त धन से सुंदर हाईस्कूल ''श्री स्वामिनारायण द्विशताब्दी स्मारक हाईस्कुल'' की स्थापना आज से ३० वर्ष पहले करके गाँव वालो को दे दिये थे । इस प्रकार स्वामिनारायण भगवान संतो, हरिभक्तो के साथ अन्य लोगो की चिंता करते थे । इसका एक उत्तम उदाहरण है ।

लवारपुर गाँव में अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, कालुपुर-गांधीनगर महंतश्री पुरुषोत्तमप्रकासदासजी स्वामी कभी-कभार आकर गाँव में आकर सत्संग का पोषण कर रहेहै ।

ऐसे पवित्र गाँव में आये मंदिर में एक बार तो दर्शन करने का लाभ अवश्य लेना चाहिए ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्यम हाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा अपने भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पूरे धर्मकुल के संकल्प से अब प्रति वर्ष श्री स्वामिनारायण म्युजियम के स्थापना दिन को २९ मार्च को मनाया जायेगा।

इस वर्ष स्वामिनारायण म्यूजियम में १४ वाँ स्थापना दिन के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २६-३-२०२५ से २८-३-२०२५ के मध्य सम्प्रदाय के सुप्रद्धि कथाकार स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से अपने म्यूजियम में प्रस्थापित महाअलौकिक प्रसादी की वस्तुओ का महात्मय की कथा रात ८-३० से १०-३० तक हजारो श्रोता सुनते थे।

ता. २९-९-२०२५ शनिवार के दिन पू. धर्मकुल के करकमलो द्वारा श्री बालस्वरुप श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक अच्छेसे किया गया था। महापूजा की पूर्णाहुति की आरती के बाद सभा में पूज्य संतो ने प्रेरक अमृतवाणी के बाद धर्मकुल के आशीर्वाद प्रदान किये।

यजमान परिवार : प.भ. गांडाभाई कालीदास पटेल, अ.सौ. सीताबेन गांडाभाई पटेल, श्री जितेन्द्रभाई गांडाभाई पटेल (अमेरिका), अ.सौ. नेहाबेन जीतेन्द्रभाई पटेल (अमेरिका), समीरभाई गांडाभाई पटेल (अमेरिका), अ.सौ. किन्नीबेन गांडाभाई पटेल (अमेरिका), रविना, सलोनी, स्वीया, सुहानी, इराज, इयान, श्री अमृतभाई कालीदास पटेल, असौ. कलाबेन अमृतभाई पटेल, श्री दिलीपभाई अमृतभाई पटेल, अ.सौ. विशालबेन दिलीपभाई पटेल, देव, रुद्र।

श्री विष्णुभाई कालीदास पटेल, अ.सौ. आनंदीबेन विष्णुभाई पटेल, निकीभाई विष्णुभाई पटेल, अ.सौ. जानकीबेन निकीभाई पटेल, किराव, किशवी।

धर्मकुल पूजन के यजमान : अ.नि. जसुबा जयेशभाई ब्रह्मभट्ट, वर्त. हा. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट(अमेरिका)।

संत पूजन के यजमान : प.भ. सुमनभाई रमणभाई पटेल, अ.सौ,. नयनाबेन सुमनभाई पटेल, वर्त जीज्ञेश, एकता, धीआ (पोर-साबरमती)।

संतो के रसोई के यजमान : प.भ. कमलेश शाह ता. २९-३-२०२५ दोपहर का भोजन प्रसाद के यजमानश्री।

मुख्य यजमानश्री : प.भ. डाह्याभाई नारणभाई पटेल परिवार, अ.सौ. विमलाबेन डाह्याभाई पटेल, (थलतेज-माणसा), श्री मेहुल डाह्याभाई पटेल, विंदी मेहुलभाई पटेल, पूरव डाह्याभाई पटेल, स्तुति पूरव पटेल, चि. मिलसा, अमोरा।

सहयजमान : प.पू. बड़े महाराजश्री के खुशी हेतु एक हरिभक्त।

रात्रिय प्रसाद के यजमान : ता. २६-३-२०२५ को डॉ. समीर पटेल (नारणघाट)। ता. २७-३-२०२५ एप्रोच बापूनगर मंदिर के समस्त हरिभक्त। ता. २८-३-२०२५ नारणपुरा, जीवराजपार्क मंदिर के हरिभक्त।

डेकोरेशन के यजमान : श्रीहरि डेकोरेटर्स, वर्त. हर्षदभाई डी. पटेल (मोटेरावाले) पुत्र विराज (यु.के.)।

फुलहार के यजमान : आर.सी. टेकनिकल मंदिर के सभी हरिभक्त।

पूरे अवसर के मध्य सभा का संचालन पू. शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर), महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (एप्रोच-बापूनगर) ने किया था।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-मार्च-२०२५

ता. ०१-०३-२०२५	प.भ. यावी श्याम हालाई तथा प्रिशा हिंमतभाई हालाई - वर्त. लंदन।
ता. ०२-०३-२०२५	प.भ.अ.नि. जशुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट - यु.एस.ए. - ह. मनोजभाई जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट, मानसी जय, काजल, भक्ति, भूमि, गोपी।
ता. ०६-०३-२०२५	प.भ. मीत नवीनभाई पटेल - नारणपुरा।
ता. १६-०३-२०२५	प.भ. जयराज परेशभाई ब्रह्मभट्ट - चांदखेडा, वर्त. देवम् तथा आदि।
ता. १८-०३-२०२५	प.भ. कल्पेशकुमार भलाभाई पटेल - कुंडासण।
ता. २३-०३-२०२५	प.भ. अश्विनभाई मोहनभाई काछिया पटेल - कोठंबा
ता. २९-०३-२०२५	श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के १४ वे वार्षिक स्थापना दिन के अवसर पर समूह महापूजा।
ता. ३०-०३-२०२५	प.भ. अल्काबेन रजनीभाई पटेल - सीतापुरवाले - वर्त. सुरत।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "प्रत्येक कार्य में मन को भगवान से जोडे रखे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी का एक लक्ष्य है कि ''भगवत प्राप्ति'' इसमें तीन विषय जुडे है। 'साध्य', 'साधक' और 'साधना' 'साध्य' जिसे हम प्राप्त करने के लिये प्रयत्न कर रहे है। 'भगवान' नरनारायणदेव दूसरे है। साधक अर्थात् 'मुमुक्षु' जीव साध्य की प्राप्ति के लिये भक्ति करता है। उसे साधक कहते है। और तीसरा ''साधना'' अर्थात साधक द्वारा साध्य की प्राप्ति के लिये जो प्रयास किया जाता है। उसे 'साधना' कहते है। साधना में 'ध्यान' सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसके बिना भगवत प्राप्ति नही होती है। उसके लिये साध्य है। महाराज की मूर्ति यह पहले निश्चित करे। कई लोगो को छपैयाधाम घनश्याम महाराज की मूर्ति अच्छी लगती है। कई लोगो को अहमदाबाद बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की मूर्ति अच्छी लगती है। किसी को नरनारायणदेव की मूर्ति अच्छी लगती है। तो किसी को एक आँख वाली सहजानंद स्वामी की मूर्ति से अच्छा लगाव है। जिससे आपका चित्त सरलता से मू र्ति से लग जाये। आप को ध्यान लगाने मे सुगमता हो। मन को ध्यान में एकाग्र करना ये कठिन अवश्य है। लेकिन असम्भव नही है। आधे मिनट भी प्रभु से जुड जाये तो अच्छा है। मन की उपमा बंदर से की जाती है। कहा जाता है कि मन वंदर की तरह चंचल होता है। लेकिन मन को सतत प्रयास से अंकुश में रख सकते है। बंदर को मदारी पहले सिखाता है। शुरु में उसके गले में ५० फुट की रस्सी बांध देता है। बंदर पहले बार कूदने का प्रयास करता है। इससे बंदर को ज्ञान हो जाता है कि मैं रस्सी से अधिक जम्प करुगा तो हमे दर्द होगा। आगे जाने में तकलीफ आयेगी। मदारी पुन ४० फुट रस्सी कर देताहै । पुनः बंदर को ज्ञान हो जाता है कि इससे आगे नही जा सकते है। इस प्रकार धीरे धीरे रस्सी छोटा कर देता है। फिर १ फुट कर देता है। बाद में बंदर समझ जाता है कि हमे इतने में ही रहना है। वह इस प्रकार समझ जाता है। इस प्रकार जब बंदर को बाहर ले जाता है। तब रस्सी बाँधनी पडती है। तो अपना मन भी इसी प्रकार से है। हम जब मंदिर मे पूजा करते है या सत्संग में होते है। तब अपना मन अंकुश में रहता है। सत्संग से बाहर आने पर माया का संसार मिलता है। तब मन भागने का प्रयास करता है। इस समय हमें अपने मन के लिये मदारी बन जाना चाहिए। कठिन है लेकिन असंभव नही है। उदाहरण स्वरुप विचार आता है कि आज कुछ खरीदने के लिये जाना है। तो यह विचार करे आज भगवान को साथ ले जायेगे। भोजन क्या बनाना है। तो यह विचार आये कि रसोई घर में भी भगवान को रखेगे। कोई भी कार्य करे। हमेशा भगवान को साथ में रखे। धीरे-धीरे आदत हो जायेगी। अपने विचार भगवानमय हो जायेगे। ध्यान करते समय विचार को भगवान के साथ जोडे। ध्यान में मुख्य तीन विषयो पर ध्यान देना चाहिए।

(१) भगवान के स्वरुप का ध्यान अर्थात् भगवान के अंगो का चिंतन करना चाहिए। (२) भगवान के गुणो का ध्यान अर्थात् भगवान के गुणो को याद करना चाहिए। (३) भगवान के लीला चरित्र का चिंतनक रना चाहिए। हम सभी को मन को संयमित करना, त्याग करना अच्छे से आता है। देखे इस समय धनुर्मास चल रहा है। तो हम सभी प्रातः काल में उठकर निद्रा का त्याग करके आते है। निश्चित करने पर ही आ सकते है। नही तो नींद सबको आती है। ठंडी में सोने का आनंद ही अलग है। फिर भी आप सभी अपने बच्चे-बच्चियो को साथ में लाते है। सर्व प्रथम नींद का त्याग करना पडता है। आप भगवान के लिये करते है। यह त्याग वैराग्य आप के अंदर भी है। इस लिये यह सब हो जाता है। हम सभी भगवान के अंश है। हम सभी को एकाग्रता की आदते है। ध्यान करने की आदत है। यह अपने अन्तर में जुडा हुआ है। आप सभी मंदिर में आते है। बाहर भी जाते है। स्कूटी या गाडी चला कर आते है। ही ईधर-उधर भटकते तो नही है। किसी को चोट नही लगे। इसलिये सावधानी से चलाते है। यही एकाग्रता होती है। कार्यालय में जाते समय सडक पर नास्ता चाय सब कुछ करते है। हम सभी सत्संगि है। इसलिये हम नही खाते। मन को संयमित रखते है। विवेक के साथ ज्ञान होता है। यदि एक दिन लारी पर एक गये तो इसकी आदरत पड जायेगी। जो स्वास्थ्य के

लिये अच्छा नही है। ऐसा विवेक रखकर रसास्वादन से दूर रहते है। यह सब विवेक की बात है। ज्ञान है। वैराग्य है। सब कुछ है। परीक्षा में तीन घंटे एकाग्रता के साथ लिखते है। क्योकि बुद्धि में विचार आता है कि यदि एकाग्रता से नही लिखेगे तो परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जायेगे। यह सब एकाग्रता के भाग है। इसी प्रकार प्रयत्न करेगे तो भगवान की मूर्ति का ध्यान करने बैठे तो उसी प्रकार एकाग्र रहे। एकाग्र होना आप सभी जानते है। मात्र दिशा ही बदलना है। प्रत्येक कार्य में भगवान हमारे साथ है। ऐसा याद करने लगे। २४ घंटे भगवान हमे देख रहे है। आप लगातार भगवान की नजर में है। कई जगह पर लिखा रहता है कि आप सी.सी.टीवी कैमरा की नजर में है। तो आदमी अनुशासन में रहता है। मै यदि गलत कार्य करुगा तो पकड लिया जाउगा। उसी प्रकार भगवान भी हमारे अर्न्तमन मे बैठै है। आप को तो आप के विचार को देखते है। आप के भाव को भी देखते है। यह ध्यान देगे तो आप से गलत कार्य नही होगा। अज्ञानता में भूल हो जाती है। ''इसके लिये प्रतिदिन रात में मानसिक क्षमा माँगे। और विशेष ध्यान दे कि आराध्य देव के अलावा किसी का ध्यान नही आये। कई जगह पूजा में चित होता है। ऐसा नही हो ना चाहिए। भगवान के अलावा किसी और का ध्यान करने पर ८४ लाख योनियो में भ्रमण करना पडेगा। भगवान हम सभी को शक्ति दे जिससे एकाग्रता बढे। ऐसा नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

•

महाराजने व्यापकानंद स्वामी का भूमापुरुष के लोक में भेजे

– भावसार पल्लवीबेन विजयभाई (लाघणज)

एकबार अक्षर के मुक्त को ब्रह्मांड देखने की ईच्छा हुई। उससे श्रीजी महाराज उन्हें भूमापुरुष किये। तब वे ब्रह्मांड से जुडे। एक रुप करके पुरे ब्रह्मांड का कारखाना चलाते है। एक रुप से पुरुषोत्तम भगवान की स्तुति करते है। वह ऐसी प्रार्थना करते है कि महाराज आप दया करके हमारे ब्रह्मांड में आये। इस प्रकार वे ४९ वर्ष तथा सवा प्रहर दिन तक स्तुति किये। तब महाराजने कहा आप के ब्रह्मांड में एक बार अवश्य पधारेगे।

तब उसने कहा कि, महाराज आप जब हमारे ब्रह्मांड में आयेगे तो हमे कैसे पता चलेगा। महाराजनेक हा कि आप के लोक में मृत्यु लोक के मुक्त से नही आ सकते है। कि जब मृत्यु लोक से मुक्त आप के लोक में आने लगे तो जान जाये कि पृथ्वी के उपर पुरुषोत्तम भगवान का अवतार हो गया है। इसके बाद जब श्रीजी महाराज अक्षरधाम में से पृथ्वी के उपर पधारे। तब सभी लोको में मुक्त को भेजे।

एक दिन महाराजने व्यापकानंद स्वामी से बोले अब आप इन्द्रलोक में जाये। तब उन्होने कहा जाकर आये। फिर बोले ''ब्रह्मा के कमलनाल को पार लेकर आये। बोले इसे भी लाये। महाराजने कहा गोलोक मे चले जाईये। व्यापकानंद चले गये। फिर बोले कि ''वैकुंठलोक में चले जाओ'', तब वह बोले चला गया। फिर बोले कि ब्रह्मधाम मे जाओ। तब बोले गये। तब महाराजने कहा कि भूमापुरुष के पास जाओ। इस प्रकार स्वामी चले तो रास्ते में विकराल एक हजार सिर वाले दैत्य सामने आया। तब स्वामी ने श्रीजी महाराज को पास बुलाया और बोले एक हजार सिर वाला दैत्य रास्ता में है। वह जाने नही देता है।

तब श्रीजी महाराज ने कहा कि जब आप ऐसा संकल्प करेगे कि जो सभी अवतारो के अवतार साक्षात् पुरुषोत्तम भगवान मुझे साक्षात् मिले हो तो इस दैत्य से जीत जाउ। तथा भूमापुरुष के पास जाउ। इसके बाद व्यापकानंद स्वामी इस संकल्प के से जीतकर आगे गये। वहाँ पर दस हजार सिर वाला राक्षस मिला। फिर स्वामी श्रीजी महाराज के पास गये। तब महाराजने एक बार आज्ञा किये। तब स्वामी दैत्य से अधिक ऐश्वर्य प्राप्त कर जीतकर भूमापुरुष के लोक में गये।

तब भूमापुरुष को पता चला कि पुरुषोत्तम भगवानने अपने पृथ्वी के उपर अवतार होने की निशानी कहे थे। वह चिहन आज प्राप्त हो गया। ऐसा जानकर व्यापकानंद स्वामी को आते देखकर सभी सभा सहित सामने खडे हो गये। इसके बाद भूमापुरुषने स्वामीजी का हाथ पकड कर बड़े सिंहासन पर बैठाये। तथा स्वामी की षोडशोपचार पूजा करके स्वयं स्वामी के पास बैठकर पुरुषोत्तम भगवान के अवतार की सूचना ले रहे थे।

तब व्यापकानंद स्वामी श्रीजी महाराज के पुरुषोत्तमपना के प्रताप, ऐश्वर्य, ध्यान, धारणा, समाधि इत्यादि महाराज के प्रताप की बात किये। यह सुनते ही भूमा पुरुष की सभा में सभी पार्षद भगवान के धाम में चले गये। भूमा पुरुष स्वयं अकेले है तो उनके ब्रह्मांड का काम कौन करेगा।

तब महाराजने कहा कि स्वामी आप यमपुरी मे जाकर स्वामिनारायण.... स्वामिनारायण कह कर तीन ताली बजाओ । तब व्यापकानंद स्वामी यमपुरी में ये । वहाँ पर खडे रहकर महाजा के षोडशानुसार तीन बजाकर भजन किये । तब वे यमपुरी के जीव भूमापुरुष के लोक में चले गये । यह बात स्वामीने महाराज से कहे।

तब महाराजने कहा जब चक्रवर्ती राजा गद्दी पर बैठता है । तब बंदियो को कैद से मुक्त कर देता है । उसी प्रकार मेरा अवतार पृथ्वी पर हुआ । तब से यमपुरी के जीव को भूमापुरुष लोक में पहुंचाया ।

•

तुलसी माता

– ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

हिन्दू धर्म में तुलसी के पौधे को पवित्र पूजनीय लक्ष्मी का अवतार माना जाता है । तुलसी की पूजा करने से सुख शांति समृद्धि भगवान के आशीर्वाद से प्राप्त होता है । प्राचीन समय में राजा वृषध्वज के पुत्र रथध्वज के पुत्र धर्मध्वज हुए । राजा धर्मध्वज – मां लक्ष्मी और विष्णु भगवान के भक्त थे । उनके रानी का नाम माधवी था ।

राजा धर्मध्वज और माधवी की पुत्री अर्थात् 'वृंदा' वृंदा का जन्म कार्तिक सुद –१५ शुक्रवार के दिन हुआ था । वृंदा धर्म आचरण में श्रेष्ठ थे । वह वायु को भक्षण करके बद्रीकाश्रम में कठोर तपस्या की थी ।

शिवपुराण के अनुसार वितपीती नाम के एक राक्षस उसका पुत्र दंभ दंभा का पुत्र शंकचूड, शंखचूड ने ब्रह्माजी की तप किया । ब्रह्माजी को खुश कर लिया । वरदान माँगा कि ''मैं देवताओ से अजेय रहूँ । ब्रह्माजी तथास्तु कह दिये । साथ में एक दिव्य कवच भी दिये । जो शंखचूड को सभी जगह विजय देने वाला था । यह भी कहे थे । आप बदरीवन जाओ वहाँ पर धर्मध्वज की पुत्री वृंदा तपस्या कर रही है । उसके साथ विवाह कर ले । शंखचूड बदरिवन जाकर वृंदा से मिले । दोनो में बातचीत हुई । तब शंखचूड कहते है कि मैं देवताओ में भगदड मचाने वाला हूँ । पूर्व जन्म में श्रीहरि के पार्षद ''सुदामा गोप'' था । लेकिन राधाजी के श्राप से शंखचूड नामक रुप में शरीर मिला है । भगवान श्री कृष्ण के प्रभाव से मुझे मेरा पूर्व जन्म याद आ गया है । और ब्रह्माजी के आदेश से तुमसे विवाह करने आया हूँ । वहाँ पर ब्रह्माजी प्रगट हुए है । वृंदा से वरदान माँगने के लिये कहते है । तब वृंदा ने कहा कि ''पूर्व जन्म में मै कृष्ण की गोपिकाओ में से गोपी तुलसी'' थी । श्रीकृष्ण की दासी सखी–प्रिया–प्रेमिका सब थी । इस बात की जानकारी राधाजी को हुआ । तो उन्होने मुझे श्राप दिया कि तुम गोलोक के योग्य नही हो । इस लिये मृत्यु लोग में जाओ । उस समय श्रीकृष्णने कहा कि तुम मृत्युलोक में जाकर ब्रह्माजी की तपस्या करना इसके फलस्वरुप हमारे अंश से भगवान विष्णुपति तरीके प्राप्त होगा ।'' बाद में ब्रह्माजी के कहने पर वृंदा शंखचूड के साथ गंधर्व विवाह किये ।

समय बितते शंखचूड ने शुक्राचार्य की आज्ञा से 'दानवो के राजा' बना दिये गये । परंतु शंखचूड श्रीकृष्ण कवच और पत्नी वृंदा के सतीत्व सुरक्षित हो गये । तथा धमंड भी आ गया था । इस कारण से देवाताओ के उपर आक्रमण कर दिये । ब्रह्माजी के वरदान के कारण सभी देवता रणभू मि छोडकर भाग गये । भद्रकाली माता शंखचूड के सामने लडती है । आकाश वाणी होती है कि 'उसके पास श्रीकृष्ण कवच तथा उसकी पत्नी का सतीत्व अखंड है । तब तक पराजित नही होगा । यह आकाशवाणी माताजी शिवजी को सुनाती है । शिवजी विष्णु भगवान को प्रेरित करते है । भगवान विष्णु ब्राह्मण का रुप धारण करके गला में पहने कृष्ण कवच को भिक्षा में मांग लेते है । दूसरी तरफ वृंदा के पति शंखचूड का रुप धारण करके घर जाकर वृंदा का सतीत्व नष्ट करते है । तब शिवजी त्रिशूल से शंख चूड का सिर शरीर से अलग कर देते है । वह सिर वृंदा के आँगन में गिरता है । यह देखकर वृंदा भगवान को श्राप देती है कि ''आप पत्थर जैसे है तो पत्थर बन जाये'' । वृंदा का क्रोध शांत करने के लिये शिवजी आते है । वे समझाते है कि हे वृंदा ! तुम यह शरीर छोडकर दुनिया की श्रेष्ठ नही 'गंडकी' बनोगी । तुम्हारी राख में से जो पेंड बनेगा वह 'तुलसी' के रुप में जाना जायेगा । भगवान विष्णु 'शालीग्राम' पत्थर बनकर हमेशा तुम्हारे साथ रहेगे ।''

इस लिये कार्तिक सुद एकादशी–देव प्रबोधिनी एकादशी के दिन 'तुलसी विवाह' करने की परम्परा है ।

तुलसी का वैज्ञानिक नाम **Ocimum Tenuiflourm** है । जब कि **Tulsi called "Holy basil" in English.**

सत्संग समाचार

विश्वके सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में विराजमान श्री नरनारायणदेव के २०३ वे पाटोत्सव पर

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में विराजमान श्री नरनारायणदेव के २०३ वे पाटोत्सव महामहोत्सव फाल्गुन सुद-३ (त्रीज) तारीख २-३-२०२५ के दिन विधिवत रुप से मनाया गया था । प्रातः ६-३० से ७ बजे के मध्य यजमान परिवारने ठाकुरजी की पूजा अर्चना करके लाभ लिये । सर्व प्रथम श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप द्वारा श्री नरनारायणआदि देवो का षोडशोपचार महाभिषेक उल्लास पूर्वक मनाया गया ।

प्रसादी के भव्य सभा मंडप में सजाये गये पंडाल में प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री विराजमान हुए थे । यजमान परिवार अ.नि. नारणभाई गोविंदभाई सुहागिया की याद में गं.स्व. गोदावरीबेन नारणभाई सुहागिया, अश्विन नारायणभाई सुहागिया, प.भ. रश्मिकाबेन अश्विनभाई सुहागिया (सिध्धि बिल्डर्स अहमदाबाद), ध्रुवेशभाई अश्विनभाई सुहागिया, ध.प. द्रष्टी ध्रुवेशभाई सुहागिया (केनेडा), घनश्यामभाई नारणभाई सुहागिया, अ.नि. शशिकांतभाई नारणभाई सुहागिया परिवार, प.भ. रमणभाई सोमदास पटेल, ध.प. अ.सौ. सविताबेन रमणभाई पटेल (मोखासण हा. चेरीहील), चि. अशोककुमार रमणलाल पटेल, ध.प.अ.सौ. पिंकीबेन अशोककुमार पटेल, चि. नीपा, वृति, सरजू, चि. भरतकुमार रमणलाल पटेल, ध.प.अ.सौ. किरणबेन भरतकुमार पटेल (बोस्टन), निराली आदि परिवार । ये सभी यजमान परिवार ने अगले दिन फाल्गुन सुद-२ को यज्ञ मंडप में बैठकर यज्ञ पूजन विधि आरतीका लाभ लिये थे । प्रसंगोचित सभा में सभी यजमानोने धर्मवंशी का पूजन-अर्चन करके आरती उतारे थे । आशीर्वाद के साथ सम्मानित भी किया गया था । पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी आने वाली शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के अवसर पर ता. २३-१-२०२६ से ता. २७-१-२०२६ तक ''समैया'' भव्यता से मनाया जायेगा । उसकी रुप रेखा समझ गये थे । अंत में श्रीहरि के तीन अपर स्वरुपो ने आशीर्वाद दिये थे । अन्नकूट की आरती धर्मकुल के करकमलो द्वारा की गयी थी । सभापतिने अच्छा संचालन पू. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)ने किया था ।

पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट सेवा मे पू. जे.पी. स्वामी, बालु स्वामी, भंडारी स्वामी, नटु स्वामी, दिव्यस्वरुप स्वामी आदि मंडल के संतो ने अच्छी सेवा दिये थे । पू. कोठारी स्वामी नारायणमुनि स्वामी आदि पाटोत्सव के मध्य अच्छी व्यवस्था किये थे ।(को.शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में फाल्गुन सुद-१५ सत्संग सभा एवम् फूलदोलोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने इस जीव के कल्याण और मोक्ष के लिये उत्सव समैया की परम्परा है । जो आज भी यह व्यवस्था चालू है । भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव का प्रागट्य उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था । इस कारण से फाल्गुन सुद पूनम अथवा वद एकस उत्तरा फाल्गुनी रहता है तो उत्सव मनाया जाता है ।

इस वर्ष कालुपुर सुद-१५ ता. १४-३-२०२५ दिन बुधवार के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का योग होने से दोपहर १२-१५ मिनट प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव के जन्मोत्सव की आरती उतारे थे । ओच्छव मंडलने ओच्छव किये थे । इसके बाद १२-३० बजे अपने भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री लगातार एक घंटे प्रसादी के चौक में सुंदर सुशोभित पंडाल में से दो स्वसंचालित सोना-चांदी की पिचकारी से हजारो हरिभक्तो को केशुडा के अच्छे रंग से सरोबोर किये । भक्त श्रद्धा के साथ इसमें भाग लिये । कुछ देर के लिये प.पू. महाराजश्री रंगोत्सव में पधारे थे ।

अ.नि. बेचरभाई मोतीभाई त्रिकमभाई पटेल परिवार के सुरेशभाई बेचरभाई पटेल, केतनभाई बेचरभाई पटेल, अंकित सुरेशभाई पटेल, निशिल केतनभाई पटेल के हाथ द्वारा समीर सुरेशभाई बेचरभाई पटेल, निकिता आरव पटेल मुखी परिवार (धमासणा) आज के पूनम की सत्संग सभा के और फूलदोलोत्सव के यजमान एकही परिवार था ।

प्रातः ८-३० से १० बजे तक सुंदर कथामृत पान स.गु. शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट महंतश्री) के वक्तापद से किया गया था । प्रसंगोचित सभा में पू. महंत स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ने श्री नरनारायणदेव प्रगटोत्सव और ''समैया'' की प्रत्येक हरिभक्तो ने विगतवार सूचना दी थी । पू. कोठारी शा. स्वा. मुनि स्वामी तथा उनकी टीम द्वारा सुंदर प्रबन्ध किया गया था । प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने यजमान परिवार के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे ।

अपने फूलदोलोत्सव का दिव्य भास्कर, संदेश आदि समाचार पत्र में कवरेज प्रकाशित किया गया था । आप सभी को धन्यवाद ।(को. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा (राज.) दूसरा पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी के सुंदर प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा के दूसरे पाटोत्सव ता. १६-३-२०२५ रविवार विधिवत रुप से मनाया गया।

यहाँ प्रत्येक रविवार को रवि सभा होता है । जिस में बालक युवक विशेष लाभ लेने आते थे।१०१ वी रवि सभा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था।

इस पाटोत्सव के अवसर पर अहमदाबाद से पू. महंत स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी संत मंडल पधारे थे।

अनुशासित सत्संग सभा, कथा-वार्ता, ठाकुरजी का संतो द्वारा षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट महापूजा की गयी थी। पू. महंत स्वामीने हरिभक्तो से बोले आप सभी नियमित सभा में आये। आज के पाटोत्सव के यजमान प.भ. प्रवीणभाई नसीत परिवार था। यहाँ के महंतश्री पू. शा. मुनि स्वामीने अच्छे से प्रबंधन करके हरिभक्तो को खुश किये थे।(हर्षदभाई पटेल - कोटा)

धोलता मंदिर में गोपालानंद स्वामी की २४४ वी जन्म जयंती मनाई गयी

धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से मू.अ.मू.स.गु.श्री गोपालानंद स्वामी की २४४ वी जन्म जयंती मनाई गयी । यहाँ के मंदिर के महंत शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से ५१०० किलो ग्राम गुड का अन्कूट रखा गया था। इस अवसर पर मारुती यज्ञ तथा रामधुन की व्यवस्था की गयी थी। अधिक संख्या में हरिभक्तोने अन्नकूट का दर्शन किये थे।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम का १९९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरदाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से ता. १८-३-२०२५ से २३-३-२०२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम के १९९ वे वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया था। प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । इसके वक्ता पद पर स.गु. शा. स्वामी चंद्रप्रकाशदाजी (बीलिया) संगीत के साथ सुंदर कथा का रसपान कराये थे । धामोधाम से संत और पूरा धर्मकुल पधारकर हरिभक्तो को खुश किये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा जेतलपुरधाम के २०० वर्ष के उत्सव का अनावरण किये थे । जिस में महोत्सव का नाम ''जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव'' दिया गया था । हजारो हरिभक्त पाटोत्सव मे अन्नकूट, कथा, प्रसाद का लाभ लिये ते। इस पाटोत्सव के यजमान अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा मंडल से रुचीवाले (श्री नरनारायण आयुर्वेदिक फार्मसी) के तरफ से पाटोत्सव मनाया गया था। गाँव के सभी भक्त तथा बगल वाले गाँव के भक्त अधिक संख्या में आकर दर्शन का लाभ उठाये थे।(शा. स्वामी जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कासिन्द्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरदाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर कासिन्द्रा का १२५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २३-३-२०२५ के दिन मनाया गया था । जिसमें जेतलपुरधाम से संत आये थे। बावला से महंत स्वामी, धोलका से संत आकर सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। गाँव के लोगो ने अच्छा लाभ लिया था। (शा. स्वामी जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला का १९ वाँ पाटोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया था। जिस में जेतलपुरधाम से स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा संत मंडल पधार कर कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । गाँव के सभी भक्त पाटोत्सव का आनंद लिये। (शा. स्वामी जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरदाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली गाँव में ता. १७-३-२५ को ३७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया था । जिस में मकनपुर मंदिर से महंत स्वामी स.गु.शा. हरिप्रकाशदासजी, जेतलपुर से शा. स्वामी जनमंगलदासजी, शा. स्वामी रामेश्वरदासजी तथा अन्य संत पधारकर कथा-वार्ता का सुंदर लाभ दिये थे । और गाँव के सभी सत्संगियोने अच्छा लाभ उठाया था । (शा. स्वामी जनमंगलदास - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल द्वारा अपने आगामी "समैया" के अनुलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम

श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी की प्रेरणा से अपने आगामी ''समैया'' के उपलक्ष्य में बोपल मंदिर द्वारा पूरे वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रम किये जायेगे।

(१) प्रातः काल श्रृंगार आरती के बाद प्रतिदिन शिक्षापत्री का एक श्लोक का पाठ करके ध्यानप्रियदासजी द्वारा श्लोक के आज्ञा की समझ तथा जानकारी प्रदान की जायेगी।(२)'वंदू' के पाठ का गान अनुकुलता के आधार पर हरिभक्तो द्वारा समूह में गाना।(३) ता. १८-३-२५ से २४-३-२५ के मध्य सायं ४ बजे से ७ बजे मंदिर में २० घंटे तक ''श्री स्वामिनारायण'' महामंत्र की धुन का प्रबन्ध करना।प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल द्वारा ''महाप्रसाद'' की व्यवस्था देना।(४) ता. ३१-३-२५ को फाल्गुन ७ जेतलपुर मंदिर के १९९ वे पाटोत्सव के अवसर पर पदयात्रा का आयोजन बोपल से वणजर होकर जेतलपुर मंदिर तक जाना।इसमें १०० भाई-बहन पाटोत्सव-अभिषेक का दर्शन करके लाभ लिये । (प्रवीण उपाध्याय - बोपल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (जुना टावर) का १८० वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आर्शीवाद से यहाँ के मंदिर के पूजारी स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (जुना टावरवाला) का १८० वाँ वार्षिक पाटोत्सव, उल्लासपूर्वक मनाया गया । ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट कथा-वार्ता, धुन-भजन संतो द्वारा किया गया था।(अनिल दूधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर नेशविल-टेनेसीनो प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

सर्वोपरी सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण उसी प्रकार परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से आई.एस.एस.ओ. के नेशविल, टेनीसी के नये मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २१ मई २०२५ बुधवार से २५ मे २०२५ रविवार के मध्य भव्यता से मनाया जायेगा । जिस के उपलक्ष में श्री विष्णुयाग, श्रीमद् भागवत कथा पारायण, शोभायात्रा, महापूजा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मूर्ति प्रतिष्ठा, महाअभिषेक, छप्पन भोग, अन्नकूट, राजोपचार रास-गरबा धर्मकुल संत दर्शन प्रकल्प रहेगा। इस उत्सव का लाईव प्रसारण **ISSONASHVILLE.ORG** तथा यु-ट्यब चैनल **ISSO Nashville** और **Kalupur Mandir** द्वारा होगा।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - फाल्गुन सुद-१५ सत्संग सभा ठाकुरजी की थाल संत-हरिभक्त के रसोई के यजमान

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के खुशी के लिये तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एव् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से फाल्गुन सुद-१५ पूनम को ता. १४-३-२०२५ शुक्रवार सत्संग सभा, ठाकुरजी को थाल, संत-हरिभक्तो की रसोई के यजमान अ.नि. बेचरभाई मोतीभाई त्रिकमभाई पटेल, सुरेशभाई बेचरभाई पटेल, केतनभाई बेचरभाई पटेल, अंकित सुरेशभाई पटेल, निशिल केतनभाई पटेल के हाथ से समीर सुरेशभाई बेचरभाई पटेल, आरव समीर सुरेशभाई पटेल (मुखी परिवार) धमासणा रहे थे। फूलदोलोत्सव के यजमान श्री प.भ. समीर सुरेशभाई बेचरभाई पटेल, निकिताबेन समीरभाई पटेल, आरव समीर पटेल (धमासणा-गांधीनगर) रहे थे । शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट-महंतश्री) के वक्ता पद से कथा को अच्छी व्यवस्था की गयी थी।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

पोष सुद-१ प.भ. यशवी श्याम हालाई (गोडपर-कच्छ), प.भ. अंकित हसुभाई सोनी (अहमदाबाद) । **पोष सुद-२** प.भ. चेतनभाई गोरधनभाई पटेल (पोर), प.भ. भावेश, पारूल, जाहान्वी वसंत भट्ट (अहमदाबाद) । **पोष सुद-३** प.भ. देवदासभाई अरजणभाई टीलवा (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. लाभुबेन परसोतमभाई लहेरी (अहमदाबाद), श्री अंबापुर गाम महिला मंडल (अंबापुर), श्री राधिका महिला मंडल (सुरत) । **पोष सुद-४** प.भ. देवेन्द्र अरविंदभाई जादव, प.भ.अ.नि. तेजेन्द्रसिंह सुखदेवसिंह वाघेला (गोधावी), प.भ.अ.नि. ताराबेन व्रजलाल सोनी (अहमदाबाद) । **पोष सुद-५** प.भ. अक्षर रमेश हिराणी (कोडकी-कच्छ) । **पोष सुद-६** प.भ. दीक्षीत अमीन पूजा (विरसद), प.भ. लीयाबेन राजुभाई कानजीभाई पटेल (गवाडा), प.भ. राजेशभाई चिनुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अमृतभाई मोहनभाई प्रजापति (महुसा), पू. हरिस्वरूप स्वामी (पोरडावाला), प.भ.अ.नि. धनलक्ष्मीबेन भाईचंदभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. मनसुखभाई मावजीभाई (धरमपुर), प.भ. दीलीपभाई परसोतमभाई सुहागीया (अहमदाबाद), प.भ. जीगर रमेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मंजुलाबेन भीखाभाई पटेल (झुंडाल) । **पोष सुद-७** प.भ. अंबालालभाई रामदास पटेल (सांकापुरा), प.भ. सौमीलभाई (अहमदाबाद), प.भ. भारतीबेन मुकेशभाई (अहमदाबाद) । **पोष सुद-८** प.भ. प्रविणभाई छगनभाई धानाणी (सुरत), प.भ. कंचनबेन परसोतमभाई (गढडा) । **पोष सुद-९** प.भ. मुकुन्दराय पंड्या (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मनहरलाल शांतिलाल चोकसी (राजकोट) । **पोष सुद-१०** प.भ. रमेशभाई कचराभाई पटेल (माणसा), प.भ. प्रविणभाई (झुंडालवाला), प.भ. निताबेन विरेशकुमार (डांगरवा) । **पोष सुद-१२/१३** प.भ. वनिताबेन गोविंदभाई हिराणी (मांडवी-पीयावा), प.भ. गोमतीबेन गोपालदास पटेल (वडु), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. तेजल देवेन्द्रभाई पटेल (जेतपुर-मच्छु), प.भ. दशरथभाई रमणलाल (कलोल), प.भ. शारदाबेन बाबुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरेशभाई चुनीलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जतीनभाई मनसुखभाई गजेरा (अहमदाबाद), प.भ. रूचिका चिंतन चौधरी (अहमदाबाद), प.भ. नरेशभाई लोहीया (अहमदाबाद) । **पोष सुद-१४** प.भ. हरगोविंदभाई सोमाभाई पटेल (खेरोल), प.भ. सांकलचंद उमेदराम पटेल परिवार (नारणपुरा), प.भ. प्रज्ञेशभाई दिपकभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. मणीबेन पूनमभाई पटेल (डेमाई), प.भ.अ.नि. मानसी निलेश भालाणी (अहमदाबाद), गोखरवाला महिला मंडल, प.भ. नीताबेन चंद्रकान्तभाई शाह, प.भ. अनीलभाई नरसीभाई संभाणी (शिलज), प.भ. चंचलबेन नाराणभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. आशिषभाई गुणवंतलाल सोनी, प.भ. विष्णुभाई मथुरदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. धीरजलाल चतुरभाई मीस्त्री (अहमदाबाद), प.भ. समीप, पार्थ कानाणी (अमरेली) । **पोष सुद-१५** अ.नि. सांख्ययोगी रसीलाबाई मनजीभाई हिराणी (भारासर-कच्छ), प.भ. हर्षदभाई कांतिलाल (वागोसणा), प.भ. हंसाबेन उपेन्द्रभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. निधिबेन चंद्रेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), स.गु.शा. स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी (सुरत) ।

पोष वद-१ प.भ. शांताबेन रतनसिंह राठोड (जीरागढ), प.भ.अ.नि. सुंदरबाई नारणभाई भुडीया (माधापर-कच्छ), प.भ.अ.नि. कुमुदबेन नटवरलाल पटेल (गामडी), प.भ. अंजनीबेन किरीटभाई भलाभाई (अहमदाबाद), प.भ. नेहलबेन - पंकजभाई सोलंकी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. वालजी वेलजी हिराणी (मिरझापर-कच्छ), प.भ. चंद्रकान्तभाई एन. राठोड (चांदखेडा), प.भ. भरतभाई धीरूभाई जागाणी (सुरत), प.भ. केयुर पटेल (अहमदाबाद), प.भ. संजयभाई देवचंदभाई वसोया (सुरत), प.भ. सुरेशभाई नटवरलाल पटेल (डांगरवा) । **पोष वद-२** प.भ. लाभुबेन धनजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनजीभाई विश्राम वरसाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. रूद्र घनश्यामकुमार, प.भ. धनबाई मूलजी खेताणी (सुखपर-कच्छ) । **पोष वद-३** श्रीजी स्वामी (जोमसोम नेपाल). **पोष वद-४** प.भ. प्रविणभाई बी. पटेल, प.भ. दिपकभाई अंबालाल पटेल (राजपुर) । **पोष वद-५** प.भ. कानबाई शिवजी सेंधाणी (माधापर-कच्छ), प.भ. घनश्यामभाई गणेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मौलिक किशोरभाई चौधरी (बदपुरा), प.भ. लीलाबेन पूरवभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मेध आशिषभाई पटेल (वडोदरा), प.भ.अ.नि. किरीटभाई त्रिभोवनदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. जगदीशभाई रणछोडभाई (अहमदाबाद) । **पोष वद-६** प.भ. रमेशभाई मावजीभाई भंडेरी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. शरदभाई कांतिलाल ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. यशवर्धन देवदत्त जोशी (अहमदाबाद) । **पोष वद-७** प.भ. अ.नि. शांताबेन (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कांताबेन रमणभाई शंकरभाई पटेल (उनावा), प.भ.अ.नि. दिलीपभाई भीमाणी (शिकागो) । **पोष वद-८** प.भ.अ.नि. अमरबेन हिराभाई वेकरीया (अहमदाबाद), प.भ. साकरबेन अनीलभाई पटेल (अंबापुर) । **पोष वद-९** प.भ. कुसुमबेन रतीलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. पुनिताबेन नवनीतभाई बारोट (अहमदाबाद) । **पोष वद-१०** प.भ. घनश्यामभाई रामजीभाई गाबाणी (खोपाला), प.भ. भरतभाई डाह्याभाई पटेल (सोजावाला) । **पोष वद-११** श्री हरिकृष्ण ईन्फ्रास्ट्रकचर रामजी लालजी (मांडवी-कच्छ), प.भ. सरोजबेन जीज्ञेशभाई पटेल (गवाडा), प.भ. रमेशभाई काथरोटीया (निकोल), प.भ.अ.नि. अमरबाई लालजी पिंडोरीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर) । **पोष वद-१२** प.भ. नटवरभाई त्रिभोवनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. किशन जयंतिभाई पटेल (अमेरिका), प.भ. निरज मनुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निर्माण रमेश गोरसीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. हरिकेष तुलसी (अंकलेश्वर), प.भ. ध्रुविल घनश्यामभाई पटेल (धमासणा), प.भ. मधुबेन कांतिलाल ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. पियुषभाई हिराभाई कानाणी, प.भ.अ.नि. वर्षाबेन निरिशभाई पटेल (चांदखेडा), प.भ. धेमरभाई परसोतमभाई चौधरी (मकाखाड), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. सुशीलाबेन अंबालाल सोनी (अहमदाबाद). ।**पोष वद-१३** प.भ. वंश सुरेशभाई पटेल (मोखासण), प.भ. महेन्द्रभाई (कुंडाल-कडी), प.भ. दशरथभाई विहीदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई सोमाभाई चौधरी (बालवा) ।**पोष वद-१४** श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल खडा, प.भ. रामबाई लालजी कारा (दहींसरा-कच्छ). **पोष वद-३०** प.भ. हितेषभाई भोगीभाई पटेल (मोयद), प.भ. निलेश रफालीया (निकोल) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

जेतलपुर मंदिर के १९९ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री तथा सभा में ''जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव'' के लोगो को विधिवत सत्संग समक्ष रखते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

कोटा (राजस्थान) मंदिर के दूसरे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते अहमदाबाद और कोटा मंदिर के महंत स्वामी अन्नकूट की आरती उतारते अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी।

मोटेरा मंदिर के ३५ वे पाटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

घाटलोडिया मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के १४ वे स्थापना दिवस पर प्रसादी के वस्तुओ की महिमा की कथा तथा तीनो अपर स्वरुप का आशीर्वाद का लाभ लेते हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव का अभिषेक करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

सभी सत्संगीयो के लिये

स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी गुरु ध्यानी स्वामी हरिस्वरुपदासजी (कलोल) को ता. २०-९-२०२४ के दिन कालुपुर मंदिर द्वारा सत्संग प्रवृत्ति तथा मंदिर द्वारा निर्धारित प्रशासनिक पद्धति के विषय मे खुलासा का उत्तर माँगा गया था। लेकिन आज तक संतोषजनक उत्तर नही मिला है। आज भी ऐसी प्रवृत्ति के सहयोग से जुडे है। जहाँ तक इस प्रकार की प्रवृत्ति तथा सहयोग के बारे में संतोषकारक उत्तर नही मिले । तब तक कालुपुर मंदिर के साथ संस्था का कुछ लेना-देना नही है। इस संस्था को श्री नरनारायणदेव के अन्तर्गत नही माना जायेगा।

समस्त सत्संग के लिये

माउन्ट आबू गुरुकुल बंद कर दिया गया है

सम्पूर्ण सत्संग को ज्ञात हो कि अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के अन्तर्गत माउन्ट आबू (राज.) श्री सहजानंद गुरुकुल पहले कार्यरत था । वर्तमान समय में बंद कर दिया गया है। इस पर आप सभी ध्यान दे।

– आज्ञा से

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष का

समैयो

23-1-2026 - 27-1-2026

श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद ॐ

अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

Praful Kharsani